राजस्थान पत्रिका
अलवर . शनिवार
19.05.2012

भारत-अमरीका मिलकर कार्य करें: थरूर

म्यांमार में लोकतंत्र बहाली का मामला

नई दिल्ली

delhibureau@patrika.com

सांसद एवं पूर्व विदेश राज्य मंत्री शशि थरूर 'म्यांमार में लोकतंत्रीकरण : चुनौतियां और संभावनाएं' पर आयोजित विचार गोष्ठी में उद्घाटन भाषण देते हुए।

सांसद और पूर्व विदेश राज्य मंत्री शशि थरूर ने शुक्रवार को कहा है कि म्यांमार में राजनीतिक सुधार किए जा रहे हैं, लेकिन वहां की सेना-नियंत्रित सरकार संसदीय उपचुनाव में आंग सांग सू की नेशनल लीग फोर डेमोक्रेसी की हिस्सेदारी की आड़ में यह भ्रम पैदा कर सकती है कि देश में वास्तव में लोकतंत्र की बहाली हो रही है। इसके बावजूद यह भारत और अमरीका दोनों के हित में है कि वह म्यांमार में लोकतंत्र की पूर्ण बहाली की दिशा में मिल कर कार्य करें। इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (आईएसएस) की ओर से राजधानी में 'म्यांमार में लोकतंत्रीकरण : चुनौतियां और संभावनाएं' पर आयोजित विचार गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए थरूर ने कहा कि भारत और म्यांमार के बीच घनिष्ठ ऐतिहासिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक रिश्ते रहे हैं। चीन ने म्यांमार की सैनिक सरकार के साथ प्रगाढ़ संबंध कायम कर अपना प्रभुत्व जमा लिया, जो भारत के विदेश नीति निर्धारकों के लिए एक चिन्ताजनक विषय अवश्य है, लेकिन कुछ समय पूर्व 3.6 अरब डालर के हाइड्रोइलेक्ट्रिकल प्रोजेक्ट की निरस्तगी से लगता है कि म्यांमार विदेश नीति के क्षेत्र में किसी एक देश पर आश्रित नहीं रहना चाहता। इस तरह की सोच भारत के लिए अपार अवसर प्रदान करती है और वह इसका पूरा लाभ उठाए। भारत की म्यांमार के साथ 1600 किमी. लम्बी स्थल सीमा है, हमारे चार राज्यों की सीमा उससे सटी हुई है और सीमा के अधिकतर भाग में घुसपैठ आसान है। इसलिए, हम उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते।

'मैनस्ट्रीम' पत्रिका के संपादक सुमित चक्रवर्ती ने कहा कि म्यांमार अभी 'असहज बदलाव' के दौर से गुजर रहा है। राजनीतिक सुधारों की ईमानदारी को लेकर कई सवाल भी खड़े होते हैं। चक्रवर्ती ने आगे कहा कि अभी यह देखना बाकी है कि सरकार जातीयता के मसले को हल करने के लिए क्या कदम उठाती है। अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों एवं दबाव के चलते राजनीतिक सुधारों की ओर बढ़ना और उन्हें अपने अंजाम तक पहुंचाना दो भिन्न बातें हैं। म्यांमार में तेल एवं गैस के भंडार के चलते उसका महत्व निश्चित रूप से बढ़ा है और भारत उसकी कतई अनदेखी नहीं कर सकता। गोष्ठी में डा. जॉर्ज मैथ्यू, प्रो. बलबीर अरोड़ा, प्रो. बालादास घोषाल, प्रो. मनमोहिनी कौल, वरिष्ठ पत्रकार राहुल जलाली ने भी अपने विचार रखे। ब्यूरो